Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 4, July-2022, ISSN 2230-7540

जीवन की गुणवत्ता की परिभाषा और आयामों का विश्लेषण करने के लिए अध्ययन

Pushpa Kumari Mahato[1]*, Dr. Shio Muni Yadav[2]

[1] Research Scholar, Madhyanchal University

[2] Research Guide, Madhyanchal University

सार - ***रोगियों के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कामकाज पर विभिन्न रोगों के प्रभावों का आकलन करने की बढ़ती आवश्यकता ने जीवन की गुणवत्ता (क्यूओएल) के मात्रात्मक मूल्यांकन के उद्देश्य से कई पहल की हैं। हालांकि कुछ लोगों के लिए यह अवधारणा बहुत विवाद का स्रोत है, लेकिन अब यह स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण संकेतक बन गया है। साहित्य में जीवन की गुणवत्ताकी कई परिभाषाएँ पाई जा सकती हैं। कई क्यूओएल अध्ययनों ने विभिन्न रोगी समूहों की भलाई के बारे में और विशेष रूप से विभिन्न चिकित्सा हस्तक्षेपों के प्रभावों के बारे में अधिक जानने का प्रयास किया है, जिन्हें केवल मात्रात्मक जैविक मापदंडों द्वारा नहीं मापा जा सकता है। और जिस अध्ययन के बारे में चर्चा की गई हैजीवन की गुणवत्ता, अध्ययन स्थलों के जनसांख्यिकीय डेटा का विश्लेषण, अध्ययन का जनसांख्यिकीय विवरण, साइट के जीवन की गुणवत्ता, साइट के जीवन की गुणवत्ता.***

खोजशब्द - ***गुणवत्ता, जीवन***

----------X----------

परिचय

जीवन की गुणवत्ता शब्द का प्रयोग व्यक्तियों और समाजों की सामान्य भलाई का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। इस शब्द का प्रयोग अंतरराष्ट्रीय विकास, स्वास्थ्य देखभाल और राजनीति के क्षेत्रों सहित संदर्भों की एक विस्तृत श्रृंखला में किया जाता है। जीवन की गुणवत्ता को जीवन स्तर की अवधारणा के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए, जो मुख्य रूप से आय पर आधारित है। इसके बजाय, जीवन की गुणवत्ता के मानक संकेतकों में धन और रोजगार और पर्यावरण, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन और ख़ाली समय और सामाजिक संबंध शामिल हैं। जीवन की गुणवत्ता की अवधारणा के विश्लेषण ने इस तथ्य को स्पष्ट रूप से स्थापित किया है कि किसी भी स्थान के जीवन की गुणवत्ताके मूल्यांकन के लिए, हमें उस स्थान विशेष के लोगों के रहने की स्थिति जानने की आवश्यकता है। रहने की स्थिति में वह संपूर्ण वातावरण शामिल है जिसमें लोग अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आसपास के वातावरण में न केवल भौतिक वातावरण शामिल होता है बल्कि इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक वातावरण भी शामिल होता है। लेकिन जीवन की गुणवत्ताविश्लेषण केवल इन मौजूदा परिवेशों का अध्ययन नहीं है। यह जितना दिखता है, उससे कहीं अधिक जटिल है। आसपास के वातावरण का अध्ययन दो दृष्टिकोणों से किया जाना चाहिए - वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक। वस्तुनिष्ठ विश्लेषण कुछ बुनियादी मानकों की उपलब्धता पर प्रकाश डालता है। दूसरी ओर, व्यक्तिपरक विश्लेषण उन लोगों की संतुष्टि को उजागर करता है जिनके लिए सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। लोगों की संतुष्टि सुविधाओं की उपलब्धता के साथ-साथ लोगों की ओर से सामर्थ्य को लेकर है। यह संतुष्टि भागफल या दूसरे शब्दों में लोगों के सुख भागफल का वास्तविक दृष्टिकोण देता है। इस तरह के अध्ययन का पहला प्रयास वर्ष 2003-2005 में किया गया था। सीआईएमएफआर और एनआईएसएम द्वारा संयुक्त रूप से उड़ीसा, केरल और कन्याकुमारी के तटीय क्षेत्रों में समुद्र तट प्लेसर खनन क्षेत्रों के आसपास रहने वाले लोगों के जीवन की गुणवत्ता का मूल्यांकन करने के लिए एक अध्ययन किया गया था। वर्तमान अध्ययन झारखंड के धनबाद जिले के झरिया कोलफील्ड में किया गया है।[10] लंबे समय तक खनन और अवैज्ञानिक खनन प्रथाओं के कारण, कोयला क्षेत्र के कई हिस्से न केवल खनिकों के लिए बल्कि निवासी आबादी के लिए भी असुरक्षित हो गए हैं। बड़े पैमाने पर मानव आपदाओं, मूल्यवान संसाधनों की हानि और पर्यावरण विनाश से बचने के लिए यह महत्वपूर्ण

www.ignited.in

है कि विस्तृत सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण के साथ लोगों के जीवन की गुणवत्ता सूचकांक का मूल्यांकन किया जाए। इससे संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान और उनकी भेद्यता के कारण की पहचान हो सकेगी। इस तकनीक का पालन करके अंतिम उद्देश्य झरिया कोलफील्ड के कमजोर निवासियों के लिए एक उपयुक्त पुनर्वास और पुनर्वास कार्यक्रम तैयार करने के लिए, स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय सभी स्तरों पर सरकार की सहायता करना है।

जीवन की गुणवत्ता

जीवन की गुणवत्ताको विभिन्न लेखकों द्वारा "सार", "सॉफ्ट", "अनाकार" अवधारणा के रूप में माना जाता है; एक के रूप में "जिसकी कोई निश्चित सीमा नहीं है"; कि "(इसे) सटीक रूप से परिभाषित करना बहुत कठिन रहा है"; यह "परिचालन में कठिन" है (लॉटन, 1991); और, यहां तक कि, जिसका "अर्थ शब्द के उपयोगकर्ता पर निर्भर है"। जीवन की गुणवत्ता को जैव-चिकित्सा क्षेत्र में स्वास्थ्य की स्थिति (जिसे स्वास्थ्य संबंधी जीवन की गुणवत्ता , नॉटन और विकलुंड, 1993 भी कहा जाता है) में स्वास्थ्य की स्थिति और मनोविज्ञान क्षेत्र में जीवन संतुष्टि के समकक्ष के रूप में परिभाषित किया गया है।[9] बिरेन और डाइकमैन (1991), यह स्थापित किया जा सकता है कि जीवन की गुणवत्ता क्या नहीं है: जीवन की गुणवत्ता पर्यावरण की गुणवत्ता के बराबर नहीं है, भौतिक वस्तुओं की संख्या के बराबर नहीं है, शारीरिक स्वास्थ्य की स्थिति या गुणवत्ता के बराबर नहीं है स्वास्थ्य देखभाल, जैसे कि यह व्यक्तिपरक निर्माणों से अलग है जैसे जीवन संतुष्टि, मनोबल या खुशी। ब्राउन एट अल के रूप में। ने कहा: "जीवन की गुणवत्ता (जीवन की गुणवत्ता) किसी व्यक्ति के जीवन की बाहरी स्थितियों और उन स्थितियों की आंतरिक धारणाओं के बीच गतिशील बातचीत का उत्पाद है"। इस प्रकार, हम इस अवधारणा को जीवन की बाहरी स्थितियों या व्यक्तिगत विशेषताओं, यहां तक कि बाहरी परिस्थितियों की धारणा तक कम नहीं कर सकते। पारिस्थितिक अर्थशास्त्री रॉबर्ट कोस्टानज़ा के अनुसार, जबकि जीवन की गुणवत्ता लंबे समय से एक स्पष्ट या निहित नीति लक्ष्य रहा है, पर्याप्त परिभाषा और माप मायावी रहा है। विषयों और पैमानों की एक श्रृंखला में विविध "उद्देश्य" और "व्यक्तिपरक" संकेतक, और व्यक्तिपरक कल्याण (एसडब्ल्यूबी) सर्वेक्षणों और खुशी के मनोविज्ञान पर हाल के काम ने नए सिरे से रुचि पैदा की है। स्वतंत्रता, मानवाधिकार और खुशी जैसी अवधारणाएं भी अक्सर संबंधित होती हैं। हालांकि, चूंकि खुशी व्यक्तिपरक है और मापना कठिन है, अन्य उपायों को आम तौर पर प्राथमिकता दी जाती है।

साहित्य की समीक्षा

अभिषेक दास (2017) धनबाद, झारखंड का दूसरा सबसे बड़ा शहर, भारत की कोयला राजधानी के रूप में जाना जाता है, 110 वर्ग किमी के लिए धन्यवाद। लहरदार भूमि का विस्तार जिसके चारों ओर खदानें और उसके आसपास के गाँव हैं। पिछले १०० वर्षों से अपनी भूमिगत कोयला खदान की आग के लिए प्रसिद्ध, यह झरिया देश के आर्थिक विकास को शक्ति प्रदान करने की क्षमता रखता है, लगभग २३ बड़ी भूमिगत खदानों का घर है और ९ खुली खदानों में लगभग ७० भूमिगत खदानें हैं, जो इसके पेट में जल रही हैं, प्रति वर्ष12-15 मिलियन टन की दर से कोयले को निगलना। इन आग ने लोगों को अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया क्योंकि ऐसी जगह पर रहना बहुत मुश्किल हो जाता है जहां आग की तेज गर्मी के कारण छत गिरने के बारे में लगातार दुविधा में रहती है, कभी-कभी जमीन इतनी गर्म हो जाती है कि तलवों के तलवे जूते पिघलना शुरू हो जाते हैं, जल संसाधन सूख जाते हैं, लोगों को आजीविका के मुद्दों का सामना करना पड़ता है और यह सब कारक मिलकर लोगों को पास के दूसरे स्थान पर जाने के लिए नकद देते हैं और अपने घरों को छोड़ देते हैं जो उनके पूर्वजों ने बनाया था और उन्हें वर्षों से घर बना दिया था। , लोगों के विस्थापन और स्थानीय लोगों के जीवन में और पर्यावरण में भी आग के प्रभाव को दिखाने का प्रयास किया गया है। यह पेपर विभिन्न स्रोतों से एकत्र किए गए द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। इसमें दिखाया गया है कि किस तरह से आग का लोगों के जीवन पर असर पड़ रहा है और साथ ही क्षेत्र के विकास में भी बाधा आ रही है. सरकार को न केवल क्षेत्र के पूरे लोगों को फिर से बसाने का प्रयास करना चाहिए बल्कि उनके नए स्थान पर कुछ वैकल्पिक आजीविका के अवसर प्रदान करने के लिए भी जाना चाहिए।**[1]**

बिस्वास, **(2015)** आग की लगातार बढ़ती प्रकृति आस-पास के बुनियादी ढांचे जैसे घरों, सड़कों, रेलवे लाइनों, बिजली के खंभों आदि के लिए एक बड़ा खतरा पैदा कर रही है। सड़कें टूट गई हैं, पौधे या तो आग के कारण जल गए हैं या कोयले की धूल से आच्छादित, बिजली के खंभे खड़े दर्शक हैं, नल प्यासे हैं और स्थानीय लोग सरकार द्वारा इन समस्याओं को ठीक करने के लिए उतावले हैं। आग की तीव्रता के कारण रेल पटरियां भी क्षतिग्रस्त हो रही हैं। धनबाद-पाथेरडीह रेल मार्ग 2007 में बंद कर दिया गया है और रेलवे लाइनें भी उखड़ गई हैं और स्टेशनों को छोड़ दिया गया है। ये स्थानीय लोगों को प्रभावित करते हैं क्योंकि वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इससे प्रभावित थे। 41 किमी लंबी धनबाद-चंद्रपुरा रेलवे लाइन को 2005 में असुरक्षित घोषित किया गया था, लेकिन फिर भी, लाइन उपयोग में है। हाल ही में फिर से आग के प्रतिकूल प्रभाव के कारण लाइन को असुरक्षित घोषित कर दिया गया है और जून 2015 से बंद कर दिया गया है। इससे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लोगों के

www.ignited.in

जीवन पर असर पड़ा है, जिससे उनकी आजीविका और अवसर प्रभावित हुए हैं।**[2]**

ट्वीशा अधिकारी, **डॉ. मंजरी भट्टाचार्जी**, **एट अल**, **(2014)** पेपर एक सामाजिक आर्थिक परिप्रेक्ष्य से जीवन की गुणवत्ता के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने का प्रयास करता है। ऐसा करते समय, जीवन की गुणवत्ता और उसके अवयवों की कुछ परिभाषाओं का अध्ययन किया गया है। जीवन की गुणवत्ता के अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक मापदंडों के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। सामाजिक-आर्थिक कारक सार्वभौमिक नहीं हैं और समय-समय पर अलग-अलग हो सकते हैं। एक केस स्टडी के रूप में, झरिया कोलफील्ड क्षेत्र का अध्ययन किया जाता है और क्षेत्र के जीवन सूचकांक की गुणवत्ता का मूल्यांकन करने के लिए एक पद्धति तैयार की जाती है। झरिया कोलफील्ड क्षेत्र का अध्ययन करते हुए, वहां के कोयला खनन के इतिहास और खनन क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता के मुद्दों का अध्ययन किया गया है। कोयला खनन क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता के मुद्दों में रियाल आयाम, गैर-भौतिक आयाम और पर्यावरणीय आयाम शामिल हैं। वहां की भूमि का उपयोग और बंदोबस्त पैटर्न दिखाया गया है। भूमि की स्थिरता के बारे में तकनीकी जानकारी के आधार पर अध्ययन क्षेत्रों का चयन किया जाता है। चयनित अध्ययन क्षेत्रों में, सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण किया जाता है और जीवन की गुणवत्ता सूचकांक तैयार किया जाता है। कीवर्ड: उपलब्धता का सूचकांक, संतुष्टि का सूचकांक, जीवन की गुणवत्ता, पुनर्वास और पुनर्वास, सामाजिक आर्थिक मानदंड, भूमि की स्थिरता।**[3]**

अरविंद कुमार राय, **बिस्वजीत पॉल**, **एट अल**, **(2010)** कोयला खनन भारत में की जाने वाली प्रमुख खनन गतिविधि है। खनन के लिए दो प्रकार की विधियों का उपयोग किया जाता है जैसे ओपनकास्ट माइनिंग और अंडरग्राउंड माइनिंग। दोनों बड़ी मात्रा में अपशिष्ट उत्पन्न करते हैं, विशेष रूप से ओपनकास्ट खनन गतिविधियों को करते समय। ओपनकास्ट परियोजना में मूल्यवान खनिज की खुदाई के लिए बड़ी मात्रा में ओवरबर्डन का विस्थापन शामिल था। खनन क्षेत्रों में, मिट्टी विभिन्न गतिविधियों जैसे ब्लास्टिंग, ड्रिलिंग और उपयोग किए जाने वाले विस्फोटकों की संख्या से प्रभावित होती है। यह पेपर झरिया कोलफील्ड्स की ऊपरी मिट्टी (0-15 सेमी) गुणवत्ता मानकों पर किए गए अध्ययन के परिणाम प्रस्तुत करता है। यह देखा गया है कि कम हुए क्षेत्रों में मिट्टी की गुणवत्ता में अपेक्षाकृत कम पीएच, कम नमी की मात्रा और उच्च चालकता होती है। वर्तमान अध्ययन ने कम क्षेत्रों में ऊपरी मिट्टी की गुणवत्ता को प्रकट करने में मदद की और इसके परिणाम झरिया कोयला क्षेत्र के पुनर्वास कार्यक्रम की योजना बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।**[4]**

ऋत्विक मजूमदार (2013) वर्तमान अध्ययन में, कोयले की आग और या खनन से संबंधित गतिविधियों और झरिया कोयला क्षेत्रों में पर्यावरणीय खतरे को प्रभावित करने वाले विभिन्न पर्यावरणीय मानकों के कारण भूमि उप-घटनाओं का पता लगाने और उन्हें चित्रित करने का प्रयास किया गया है, उच्च-रिज़ॉल्यूशन स्पेसबोर्न ऑप्टिकल और सिंथेटिक एपर्चर रडार डेटा का उपयोग करना। माइक्रोवेव रिमोट सेंसिंग में इलाके की संवेदनशीलता और इलाके की विशेषताओं से रडार तरंग के बिखरने के गुणों के संदर्भ में सतह की विशेषताओं का पता लगाने की एक अनूठी क्षमता है। यह उत्थान या अवतलन के मामले में धीमी सतह की गति का पता लगाने में भी सक्षम है। विभिन्न भू-आधारित तकनीकों, जैसे कि अंतर जीपीएस और भूमि अवतलन के लिए ऑप्टिकल लेवलिंग अध्ययन का उपयोग अंतरिक्ष-जनित मापों के मूल्यांकन और सत्यापन के लिए भी किया गया है। जमीनी विकृति का पता लगाने और उसे चित्रित करने के लिए आज तक उपलब्ध विभिन्न अंतरिक्ष-जनित तकनीकों में, डिफरेंशियल इंटरफेरोमेट्रिक एसएआर (डी-इनएसएआर) को स्थानिक रूप से निरंतर जमीनी विरूपण को मापने के लिए सबसे कुशल तकनीक माना जाता है। इस कार्य में, उपग्रह-आधारित दिनसारीतकनीक को भूमि अवतलन से प्रभावित क्षेत्रों की पहचान करने और2003-2007 की समयावधि के लिए एक स्थानिक रूप से निरंतर भूमि अवतलन मानचित्र तैयार करने के लिए भूमि अवतलन की दर को मापने के लिए नियोजित किया गया है।**[5]**

भाबेश चंद्र सरकार (2007) जल गुणवत्ता सूचकांक, मानव उपभोग के लिए पानी की उपयुक्तता का आकलन करने के लिए अध्ययन क्षेत्र में प्रत्येक नमूना नेटवर्क स्टेशन के लिए गणना की गई, सतही पानी और खदान के पानी की गुणवत्ता बहुत खराब थी। वायु गुणवत्ता सूचकांक ने संकेत दिया कि भारतीय मानकों के अनुसार स्वच्छ हवा वाला कोई नमूना स्टेशन नहीं है, जो खतरनाक वायु गुणवत्ता को इंगित करता है। बहु-मानदंड मूल्यांकन (एमसीई), एक संभावित जीआईएस उपकरण, जीवन की गुणवत्ता के संदर्भ में तनावग्रस्त गांवों की विभिन्न डिग्री के चित्रण के लिए लागू किया गया है। झरिया कोयला क्षेत्र में पर्यावरणीय रूप से तनावग्रस्त गांवों के चित्रण के लिए विभिन्न भू-पर्यावरणीय मापदंडों जैसे भूजल की गुणवत्ता, सतही जल, खदान का पानी और गाँव की आबादी घनत्व के साथ-साथ हवा की भूमिका पर जोर दिया गया है। एकीकृत क्लस्टर विश्लेषण और एमसीई दृष्टिकोण जीवन की गुणवत्ता के संदर्भ में झरिया कोलफील्ड में भू-पर्यावरणीय गुणवत्ता मूल्यांकन के लिए एक बेहतर साधन प्रदान करते हैं।**[6]**

अनुसंधान क्रियाविधि

जीवन की गुणवत्ता निर्धारित करने के लिए जिन मापदंडों पर विचार किया गया था, वे अध्ययन के उद्देश्य, नमूना फ्रेम की प्रकृति और पर्यावरण जिसमें नमूना फ्रेम स्थित है, के आधार पर एक नमूना फ्रेम से दूसरे में भिन्न थे। जिस वातावरण में नमूने स्थित थे, उस क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक मानकों की प्राथमिकता निर्धारित करता है और इस प्रकार उस विशेष इलाके में जीवन की गुणवत्ता के मूल्यांकन के लिए मानकों का चयन किया जाता है। वर्तमान अध्ययन में, अध्ययन के उद्देश्य और नमूना फ्रेम के स्थान के अनुरूप 15 मापदंडों का चयन किया गया था। 15 मापदंडों में से 10 मूर्त पैरामीटर होंगे और 5 गैर-मूर्त पैरामीटर होंगे। चुने गए मापदंडों पर चर्चा की गई।

झरिया कोलफील्ड की चयनित कोलियरी में 15 सामाजिक-आर्थिक मापदंडों के साथ एक टोही अध्ययन किया गया था। पैरामीटर आवास, शैक्षिक सुविधा, आय और रोजगार, बाजार सुविधा, चिकित्सा सुविधा, परिवहन और संचार सुविधा, ईंधन उपलब्धता, बिजली आपूर्ति, पानी की उपलब्धता, जल निकासी और स्वच्छता, भौतिक और सामाजिक वातावरण, मनोरंजन, सामाजिक सुरक्षा, मानवाधिकार, और साइट- विशिष्ट शर्तें।[7]

निष्कर्षों से पता चलता है कि साइटों के अधिकांश निवासी कानूनी शीर्षक धारक नहीं हैं, हालांकि इन साइटों पर किसी भी बस्तियों में संरचनाओं के प्रकार व्यापक रूप से भिन्न होते हैं, छप्पर झोपड़ियों से लेकर पक्की 2/3 मंजिला इमारतों तक। इसलिए, वृहद स्तर पर जीवन की गुणवत्ता के अध्ययन के लिए आवास पर विचार किया गया।

अध्ययन क्षेत्र में 20 कोलियरी के 115 खान स्थलों से मानकों का संतुष्टि स्तर दर्ज किया गया। इन 115 स्थलों में चयनित 9 सामाजिक-आर्थिक मापदंडों के वितरण की समीक्षा की गई ताकि क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक प्रोफाइल का आकलन किया जा सके। उत्तरदाताओं के बीच इन मापदंडों के लिए संतुष्टि स्तर का विश्लेषण करके इस तरह के वितरण का अध्ययन किया गया था।

अध्ययन स्थलों में आवासों की गुणवत्ता के मूल्यांकन के लिए पाँच कारकों को ध्यान में रखा गया। वे संरचना संरचना प्रकार, फर्श क्षेत्र, और अलग रसोई कमरे की उपलब्धता, संरचना की स्थिति और स्वामित्व की स्थिति थे। इधर, इस अध्ययन में वास्तविक कालीन क्षेत्र को एक घर के फर्श क्षेत्र के रूप में लिया गया था। विश्लेषण स्कोर विभाजन की एक योजना के आधार पर एक समग्र सूचकांक के माध्यम से किया गया होगा। प्रत्येक साइट के लिए अंतिम स्कोर प्राप्त करने के बाद, उन्हें साइटों में रहने की गुणवत्ता का संकेत देते हुए रैंक किया गया था।

फील्डवर्क की सुविधा के अनुसार और एक यादृच्छिक नमूना सर्वेक्षण के आधार पर, घरेलू स्तर के अध्ययन के लिए 10 साइटों को लिया गया था। ये स्थल कोलियरी से संबंधित हैं जिनका मैक्रो-स्तरीय अध्ययन के लिए सर्वेक्षण किया जाएगा। प्रत्येक अध्ययन स्थल से, कुल जनसंख्या के 33% का एक प्रतिनिधि नमूना परिवारों के रूप में लिया गया था। यह चयन भी रैंडम सैंपलिंग तकनीक के आधार पर किया गया था।

डेटा विश्लेषण

अध्ययन स्थलों के जनसांख्यिकीय डेटा का विश्लेषण

अध्ययन स्थलों में विस्तृत जनसांख्यिकीय सर्वेक्षण करने का मुख्य उद्देश्य जनसंख्या के वास्तविक आकार और अन्य जनसांख्यिकीय विवरणों का अनुमान प्राप्त करना है। यह अनुमान लक्षित आबादी के पुनर्वास और पुनर्वास की योजना बनाने में मदद करेगा। सभी 10 अध्ययन स्थलों को एक इकाई माना जाता है क्योंकि उन सभी को एक साथ एक नई साइट पर स्थानांतरित कर दिया जाएगा और इसलिए साइटों के लिए समग्र रूप से पुनर्स्थापन और पुनर्वासकी योजना बनाई जाएगी। एक साथ 10 साइटों के जनसांख्यिकीय विवरण निम्नलिखित हैं:[8]

तालिका 1: अध्ययन का जनसांख्यिकीय विवरण

विवरण	2014 (प्राथमिक डेटा)
कुल जनसंख्या	2634
कुल परिवार	533
पुरुषों	1430
महिलाओं	1204
0 - 6 आयु वर्ग	456
7 -14 आयु वर्ग	554
15 - 59 आयु वर्ग	1494
60 और उससे अधिक	130
लिंग अनुपात	841.958

www.ignited.in

तालिका 2: साइट के जीवन की गुणवत्ता 61O1

साइट 61O1				
पैरामीटर	**के सूचकांक संतुष्टि(X)**	**उपलब्धता का सूचकांक(Y)**	**X+Y**	**(X+Y)/2**
स्वास्थ्य सेवा	0.9	0.140625	1.040625	0.52031
शिक्षा	0.9	0.765625	1.665625	0.83281
सुविधा	0.5	0.515625	1.015625	0.50781
परिवहन और संचार	0.5	0.4375	0.9375	0.46875
पेय जल	0.5	0.5625	1.0625	0.53125
बिजली	0.9	0.8125	1.7125	0.85625
आपूर्ति	0.5	0.40625	0.90625	0.45313
सामाजिक पर्यावरण	0.5	0.515625	1.015625	0.50781
मनोरंजन	0.5	0.359375	0.859375	0.42969
			SUM=	**5.10781**
			QOL=	**0.56753**

तालिका 3: साइट के जीवन की गुणवत्ता 64P1

साइट 64P1				
पैरामीटर	**के सूचकांक संतुष्टि(X)**	**उपलब्धता का सूचकांक(Y)**	**X+Y**	**(X+Y)/2**
स्वास्थ्य केंद्र	0.7	0.140625	0.840625	0.42031
शिक्षा	0.7	0.765625	1.465625	0.73281
सुविधा	0.5	0.515625	1.015625	0.50781
परिवहन और संचार	0.5	0.4375	0.9375	0.46875
पेय जल	0.5	0.5625	1.0625	0.53125
बिजली	0.7	0.8125	1.5125	0.75625
आपूर्ति	0.3	0.40625	0.70625	0.35313
सामाजिक और.	0.5	0.515625	1.015625	0.50781
मनोरंजन	0.3	0.359375	0.659375	0.32969
			योग =	**4.60781**
			जीवन की गुणवत्ता =	**0.51198**

निष्कर्ष

यह प्रत्येक अध्ययन क्षेत्र के लिए बुनियादी प्राथमिकताओं को निर्धारित करने में मदद करता है। क्षेत्र में जिन परिस्थितियों का अभाव है, वे प्राथमिकता सूची में महत्वपूर्ण कारक बन जाते हैं। इसलिए, नीति निर्माताओं के लिए जीवन की गुणवत्ता अध्ययन फायदेमंद है। यह किसी भी क्षेत्र के लिए विकासात्मक नीतियों को तैयार करने में मदद करेगा, वर्तमान अध्ययन से, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उप-क्षेत्र (लोर्ना क्षेत्र) में ऊपरी मिट्टी दिन-प्रतिदिन धीरे-धीरे खराब हो रही है। खनन कार्यों के दौरान, मिट्टी के कटाव, क्षरण, धूल प्रदूषण और स्थानीय जैव विविधता पर पड़ने वाले प्रभावों को कम करने के लिए अच्छी योजना और पर्यावरण प्रबंधन द्वारा कदम उठाए जाने चाहिए। उपरोक्त दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए सुरक्षित (कम अवक्रमित), पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ खान नियोजन के लिए सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा अवक्रमित भूमि का प्रभावी प्रबंधन है। ओपनकास्ट खनन की योजना इस प्रकार बनाई जाए कि खदान क्षेत्र के बंद होने के बाद इसे आसपास के वन क्षेत्रों में मिलाने के लिए वनीकरण किया जा सके।

संदर्भ

1. अभिषेक दास "झरिया कोयला खदान की आग और इसका प्रभाव" झारखंड जर्नल ऑफ डेवलपमेंट एंड मैनेजमेंट स्टडीज XISS, रांची, वॉल्यूम. 15, नंबर 3, (2017) पीपी 7439-7450 ।

2. बिस्वास, पी. "आग से दूर रहना। इंडियन एक्सप्रेस। http://indianexpress.com/article/india/india-

others/staying-away-fromfire/ (2015) से लिया गया।

3. ट्वीशा अधिकारी, डॉ मंजरी भट्टाचार्जी, एट अल, "जीवन विश्लेषण की गुणवत्ता: झरिया कोलफील्ड के संबंध में सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य" आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस (आईओएसआर-जेएचएसएस) खंड 19, अंक 12, वर्(2014) । छठी, पीपी 33-45

4. अरविंद कुमार राय, बिस्वजीत पॉल एट अल "झरिया कोलफील्ड, धनबाद, झारखंड में सब्सिड एरिया के आसपास के क्षेत्र में शीर्ष मिट्टी की गुणवत्ता का आकलन" पर। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ रिमोट सेंसिंग इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन वॉल्यूम 2, संख्या.9(2010)

5. ऋत्विक मजूमदार "झरिया कोलफील्ड, झारखंड, भारत की पर्यावरण निगरानी, बहु-ध्रुवीकरण एसएआर और इंटरफेरोमेट्रिक एसएआर डेटा का उपयोग" पर भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन विभाग, भारत सरकार। भारत का, देहरादून - २४८००१ उत्तराखंड, भारत, वॉल्यूम. 10, 2013,नंबर 2,

6. भाबेश चंद्र सरकार (2007) "झरिया कोलफील्ड, भारत में भू-पर्यावरणीय गुणवत्ता मूल्यांकन, बहुभिन्नरूपी सांख्यिकी और भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग" पर फरवरी 2007 पर्यावरण भूविज्ञान वॉल्यूम. 57, नंबर 1, 119DOI:10.1007/s00254-006-0409-8

7. रॉय, एस. 100 से अधिक वर्षों से जल रहा है, झारखंड की भूमिगत आग 5 लाख लोगों को प्रभावित करती है। तुम्हारी कहानी।वॉल्यूम. 7, नंबर 2,2017 https://yourstory.com/2017/ 06/sharia-coal-fire. से लिया गया

8. मोइदु जमीला रियास, ताजदारुल हसन सैयद"ओपन एक्सेस आर्टिकल डिटेक्टिंग एंड एनालिसिस द इवोल्यूशन ऑफ सब्सिडेंस ड्यू टू कोल फायर्स इन झरिया कोलफील्ड, इंडिया यूजिंग सेंटिनल -1 एसएआर डेटा" एमडीपीआई जर्नल्स रिमोट सेंसिंग, वॉल्यूम 13, अंक, 8,10.3390 /rs13081521.RemoteSens. 2021, 13(8),1521; https://doi.org/10.3390/rs13081521

9. कुमार ए, सिंह पी.के. क्वालिटेटिव असेसमेंट ऑफ माइन वाटर ऑफ द वेस्टर्न झरिया कोलफील्ड एरिया, झारखंड,वॉल्यूम. 5, नंबर 5, 2016 DOI: http://dx.doi.org/10.12944/CWE.11.1.37

10. स्ट्रैचर, जी.बी.; प्रकाश, ए.; सोकोल, ई.वी. कोल एंड पीट फायर्स: ए ग्लोबल पर्सपेक्टिव, पहला संस्करण; एल्सेवियर: एम्स्टर्डम, नीदरलैंड्स; खंड 1, 2010,आईएसबीएन 978-0-444-52858-2।

Corresponding Author

Pushpa Kumari Mahato*

Research Scholar, Madhyanchal University

www.ignited.in